# "उपसंहार"

# उपसंहार

हिंदी की ख्याति प्राप्त कथा-लेखिका अलका सरावगी के विवेच्य उपन्यासों का अनुशीलन करने के उपरांत निष्कर्ष रूप में जो महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए हैं, वे समन्वित रूप में प्रस्तुत किए है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है।

प्रथम अध्याय में अलका जी का व्यक्तित्व और कृतित्व अपने जीवन में आए चढ-उतारों के साथ गुजरा है, यह परिलक्षित होता है। अलका जी का जीवन मारवाडी परिवार में पारंपारिक रूप से व्यतित हुआ जान पडता है। उनके व्यक्तित्व की छाप उनके साहित्य पर पडी हुई परिलक्षित होती है। इन्होंने अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी को अच्छी तरह निभाया है। अलकाजी का परिवार बडा होने के नाते उनकी जिम्मेदारियाँ भी बडी है। इससे अलका जी का व्यक्तित्व उच्च कोटि का दृष्टिगोचर होता है। अलका जी को कथाकार के रूप में कामयाबी हासिल करने में उनका परिवार खासकर उनके पति का साथ अनमोल रहा है। अलका जी शादी से पहले स्नातक तक पढ़ी थी और शादी के बाद उन्होंने पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की और लेखन कार्य भी शादी के बाद ही शुरू किया।

उनका पहला उपन्यास 'कलिकथा : वाया बाइपास' सन 1998 में प्रकाशित हुआ है। उनकी साहित्ययात्रा को अभी प्रारंभ हुआ है, इसी कारण इनका रचना संसार अधिक नहीं है। लेकिन थोडी ही अवधि में उनका पहला उपन्यास 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। उनकी परिश्रमवृत्ति, आत्मविश्वास, से परिपूर्ण महत्त्वाकांक्षी वृत्ति का असर उनके साहित्यिक रचनाओं में दिखाई देता है। अत: इनके उपन्यास नारी चेतना को बढावा देने वाले है। इन्होंने उपन्यास एवं कहानी में नए से नए अछूते क्षेत्रों पर नजर डालकर पाठकों के सामने अपने लेखनी के सहारे उतारा है। इसलिए उनका साहित्य जनप्रिय हुआ है।

इनके साहित्य में मुख्य विषय नारी समस्या ही रहा है। 'शेष कादम्बरी' में इन्होंने नारी के अकेलेपन की समस्या को प्रमुखता देकर उसे पाठकों के सामने लाने की कोशिश की है। 'कोई बात नहीं' इस उपन्यास में एक बच्चे की विकलांगता को सामने रखकर खुद अलका जी ने अपने बेटे की ही समस्या को या शारीरिक दुर्बलता को दर्शाया है। यह स्वयं अपने बच्चे को ठीक करने में जुटी हुई है। उनके साहित्य को यथोचित सम्मान भी मिला है। पुरस्कारों के साथ-साथ जनप्रियता-पाठकों की प्रशंसा भी पाने में अलका जी सफल रही है।

द्वितीय अध्याय में अलका सरावगी के 'कलिकथा : वाया बाइपास', 'शेष कादम्बरी' और 'कोई बात नहीं' इन तीन उपन्यासों के कथ्य का अनुशीलन किया है। प्रस्तुत उपन्यासों में आधुनिक समस्याओं को उजागर किया है। 'कलिकथा : वाया बाइपास' में प्राकृतिक आपदा, भूखमरी, राजनीतिक समस्याएँ, औद्योगिक क्षेत्र की समस्याएँ चित्रित की गई है। 'शेष कादम्बरी' में कामकाजी नारी की समस्याएँ चित्रित है। उपन्यास का प्रमुख पात्र रूबी दी की निराशा, कुंठा और अकेलापन मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया गया है। 'कोई बात नहीं' में विकलांग बच्चा शशांक की विवशता व्यक्त हुई है। शशांक के जीवन से प्रभावित दादी माँ, आरती मौसी और माँ के भावजीवन को चित्रित किया है। विकलांग बच्चों की परवरिश में उत्पन्न स्थिति का चित्रण मिलता है।

इस प्रकार विवेच्य उपन्यासों में कामकाजी नारी, गृहिणी नारी और समाज-सेविका नारी की समस्याएँ प्रस्तुत करने में लेखिका सफल हुई है। आधुनिक नारी का भावविश्व चित्रित करने के लिए लेखिका ने उपन्यास के शिल्प के नये प्रयोग अपनाए है। इसकी चर्चा चतुर्थ अध्याय में विस्तार से की गई है। संक्षेप में लेखिका ने अपने कथ्य को प्रस्तुत करने के लिए महानगरीय परिवेश को अंकित किया है।

तृतीय अध्याय में लेखिका ने अपने उपन्यासों में ऐसी घटनाओं का यथोचित वर्णन किया है कि उसमें विविधता झलकती है। उनके द्वारा चुने गए विषय एक पहलु के सही-सही दर्शन करवाये हैं। उनमें नाममात्र के लिए भी कृत्रिमता का स्थान नहीं दिखाई देता है। इसमें अलकाजी ने नारी का अकेलापन, विधवा समस्या, वैवाहिक जीवन में तनाव की समस्या, समस्याओं से लडनेवाली नारी का चित्रण किया है। उसी के साथ भविष्य में आनेवाली प्राकृतिक आपदा, भूखमरी, राजनैतिक समस्याएँ, औद्योगिक क्षेत्रों की समस्या आदि समस्याओं को उभारकर समाज को चुनौती दी है।

'कलिकथा : वाया बाइपास' उपन्यास में अलकाजी ने किशोर बाबू की बाइपास सर्जरी से उनकी जिंदगी को तीन भागों में बाँटा है। जो हर जिंदगी के साथ पाठक को भी घुमाती है। इसमें स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर घटनाओं के साथ गांधीवादी और सुभाषवादी विचारों को शांतनु और अमोलक के द्वारा दुहराया है। 'शेष कादम्बरी' की रूबी गुप्ता की घुटन भरी जिंदगी को उसने एक सामाजिक संस्था के साथ किस तरह बिताया है इसका निरूपण लेखिका ने अच्छी तरह किया है। इसमें अनेक नारियों के व्यक्तित्व के पहलुओं को उजागर किया है। 'कोई बात नहीं' में एक छोटे बच्चे की अक्षमता को पाठकों के सामने रखा है।

विवेच्य उपन्यासों में सामाजिक जीवन, राजनीतिक जीवन, दाम्पत्य जीवन, वेश्या जीवन, विधवा जीवन, नारी के अकेलापन का जीवन आदि को चित्रित किया है। अलकाजी ने अपने उपन्यासों में ऐसी समस्याओं को उभारा है जो सारे विश्व में फैली हुई है और इसका परिणाम हर नारी को भुगतना पड रहा है।

विवेच्य उपन्यासों में लेखिका ने अलग-अलग सही पर समाज स्थित ज्वलंत समस्याओं को उभारा है। जो समाज के बोध के दृष्टिकोन से विशेष परखा जा सकता है। इस तरह अलकाजी ने समाज में नारी को हर अधिकार दिलाने की कोशिश के साथ-साथ उसे अपना अधिकार देने की भी माँग की है।

चतुर्थ अध्याय के अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते है कि अलकाजी ने अपने उपन्यासों में सरस, सहज अभिव्यक्ति विचारों के द्वारा शिल्प में विविधता चित्रित की है। विवेच्य उपन्यासों का आरंभ वर्णनात्मक, पत्रात्मक और काव्यात्मक शैलीद्वारा किया है। आलोच्य उपन्यासों के पात्र अपनी-अपनी जगह महत्त्वपूर्ण है। ये पात्र समाज के अलग-अलग वर्गों से आए हुए है। इनके पात्र अपने जिंदगी से संघर्ष करते दिखायी देते है। संघर्षशील पात्रों के द्वारा कथात्मक में रोचकता जिज्ञासा बढ़ती है और इसमें ऐसे ही पात्रों का लेखिका ने चित्रण किया है। पात्रों में अलगता के साथ आधुनिक सामाजिक चेतना, राजनैतिक दृष्टिकोन इसमें विशिष्टता नजर आती है।

विवेच्य उपन्यासों के संवाद या कथोपकथन से उपन्यासों का या कथावस्तु का विकास हुआ है। इसमें संवाद जिज्ञासा बढानेवाला है। संवादों में सरलता, स्वाभाविकता, मार्मिकता आयी है, इसलिए उपन्यास अर्थपूर्ण बन गए है। कथोपकथन में कही-कहीं लोकगीतों, सुक्तियों का तथा साहित्यिक काव्य पंक्तियों का प्रयोग हुआ है, इससे संवादों में जान आ गयी है।

शैली का संबंध लेखिका की रूचि से होता है। जिस शैली का उपयोग ज्यादा किया गया है उस शैली में उस रचनाकार की रूचि ज्यादा होती है। उपन्यासों में अरबी, फारसी, संस्कृति, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। शैलियों में विवरणात्मक, किस्सागोई, पूर्व दीप्ति (फ्लैश बैक), पत्रात्मक, डायरी आदि शैलियों का प्रयोग हुआ है। इस कारण विवेच्य उपन्यासों की भाषा प्रभावात्मक और कलात्मक बन गयी है। साथ ही लेखिका का साहित्य जगत में अलग स्थान बन गया है।

समग्र रूप से अवलोकन करने पर कहा जा सकता है कि अलका जी अपनी भाषा, कथ्य, शैली को अलगता से लिखने से साहित्य संसार में विशिष्ट छाप छोड दी है।

पंचम अध्याय में अलकाजी समकालीन उपन्यासों को अलग स्थान स्थापित करने में सफल हुई है। अलकाजी के उपन्यासों में नारी जीवन की समग्रता प्रस्तुत करने में सफलता हासिल की है। अलकाजी के समकालीन महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में सामाजिक विचार, राजनीतिक विचार, सांस्कृतिक विचार, धार्मिक एवं वैज्ञानिक विचार आदि द्वारा पाठकों को लाभान्वित किया है। हिंदी उपन्यासों में महिलाओं ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन के समग्र पहलूओं को चित्रित करने की कोशिश की है।

हिंदी उपन्यासों में आरंभ से ही महिला साहित्य का आधार केंद्र बनी हुई है। वैदिक काल से आज तक महिलाओं को साहित्य में मुखरित किया गया है। हिंदी का साहित्य लेखन उन्नीसवीं शताब्दी से शुरू हुआ है। इसमें अनेक महिलाओं ने लेखन किया है। शैल कुमारी देवी से गिरिजा देवी तक प्रमुख नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने परिवार को संभालते-संभालते अपने साहित्य को भी स्थान देने की कोशिश की है। महिला लेखिकाओं ने अपनी ही याने की नारी की समस्याओं को उनके त्याग और बलिदान को वर्णित किया है। उसी के साथ महानगरीय बोध, व्यक्तिवादी चिंतन, आधुनिक बोध, नारी जागरण, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति, आत्मनिर्वासन, अजनबीपन, अकेलापन आदि नारी के साथ समाज के भी पहलुओं को उजागर किया है।

इन सब लेखिकाओं को सामने रखकर अलका जी ने उपन्यास साहित्य का विचार कियाजाय तो वह इन सबसे अनूठा होगा। इनके उपन्यास आधुनिक समस्याओं का चित्रण, आनेवाले भविष्य की तुलना में किया है, जो दस्तक दे रही हैं। इनके उपन्यासों में हर समस्या याने की नारी की समस्याएँ औद्योगिकी समस्याएँ, राजनीतिक समस्याएँ, अंध:विश्वास की समस्याएँ आदि समस्याओं को हमारे सामने रखा है। इस प्रकार इस अध्याय में अलकाजी का स्वाभाविकता का और स्वचेतना का गुण झलकता है।

अलका जी ने अपनी संवेदना महानगरीय एवम् मध्यवर्गीय जीवन के प्रति अभिव्यक्त की है। उनके नारी पात्र केवल परिवार चलानेवाले न होकर सामाजिक प्रतिबद्धता से संबंधित है। तात्पर्य, यह कि उनके नारी पात्र समाज के प्रति आदर्श दर्शनिवाले हैं। नारी का मनोविश्लेषण करके उनकी समस्याएँ चित्रित की है। नारी की समस्याओं को ही केवल चित्रित नहीं किया, अपितु उसका समाधान भी मिलता है।

अलका सरावगी का जीवन कोलकाता महानगर में बिता। अत: उनके साहित्य में महानगरीय जीवन का चित्रण स्वाभाविकता से मिलता है। हिंदी की कुछ महिला उपन्यासकारों ने ग्राम्य जीवन

चित्रित किया है। इस दृष्टि से अलका जी का उपन्यास सृजन एक विशेष मौलिकता एवं अनूठी उपलब्धि है। अत: हिंदी के समीक्षकों का ध्यान उनके साहित्य पर विशेष रूप से गया है। परिणामस्वरूप उनका साहित्य साहित्य अकादमी पुरस्कृत हो गया। इस प्रकार अलका सरावगी आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की बहुचर्चित लेखिका है।

**लघु शोध-प्रबंध के दौरान निष्कर्ष के रूप में निम्नांकित तथ्य उभरकर सामने आते है -**

1. अलका जी के उपन्यासों में चित्रित नारियाँ समस्याओं के साथ जुझती हुई नजर आती है और इसके साथ ही नारी के हक की माँग करती है।
2. अलका जी की नारियाँ समाज के साथ समझौता कर पुरूषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर चलनेवाली है।
3. अलका जी की नारियाँ भारतीय संस्कृति को अपनाना तो चाहती है। लेकिन उसपर पाश्चात्य संस्कृति की छाया है।
4. अलका जी की नारियाँ पारंपारिक विचारोंवाली है, लेकिन उनमें जो घुटन है वह हर नारी की समस्या है।
5. अलका जी ने नारी का अकेलापन कितना कटु और कितना दर्दभरा होता है यह 'शेष कादम्बरी' की रूबी दी द्वारा निर्दिष्ट किया है।
6. नारी की अनेक समस्याओं के साथ-साथ उन्हें सुलझाने की कोशिश भी की है।
7. नारी की पारिवारिक जिंदगी में आधुनिकता को स्वीकारा नहीं जाता, उसे पारंपारिक जीवन पद्धति से ही रहना पडता है, यह 'कलिकथा : वाया बाइपास' की किशोर बाबू की बहू द्वारा दर्शाया है।

निष्कर्षत: कह जा सकता है कि अलका सरावगी ने अपने उपन्यासों में नारी के विविध पहलुओं का, समस्याओं का संघर्षपूर्ण जीवन का सूक्ष्मता के साथ अंकन किया है।

**उपलब्धियाँ :-**

1. अलका सरावगी का व्यक्तित्व संघर्षशील और जिम्मेदारियों को संभालता हुआ प्रभावशील बन पडा है। साथ ही उनके उपन्यासों में जन-जीवन का सशक्त चित्रण दिखाई देता है।
2. अलका जी ने उपन्यासों के शीर्षक सपाट बयानी न होकर अभिधात्मक, नवीन एवं प्रतीकात्मक दिखाई देते है।

3. विवेच्य उपन्यासों में नारी का पारिवारिक जीवन, महानगरीय जीवन, पाश्चात्य संस्कृति तथा समस्याओं का मूल्यांकन किया है।
4. नारी के मन स्थिति, उसकी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, अनछुए प्रसंगों आदि घटनाओं के गहराई में झाँककर उनकी स्थिति को भी प्रकट किया है।
5. अलका जी ने अपने उपन्यासों में अन्यान्य विषयों को प्रस्तुत किया है।
6. विवेच्य उपन्यासों में आधुनिकता के अनेक पहलुओं को दर्शाया है। जैसे आधुनिक नारी जीवन, उसका रहन-सहन, आदि को चित्रित किया है।
7. विवेच्य उपन्यासों में बदलते आयामों के साथ नारी के बदलते रूप एवं उनके जीवन विशेष का चित्रण मिलता है।
8. अलका जी अपने उपन्यासों में फ्लैश बॅक (पूर्वदीप्ति) शैली के द्वारा आधुनिक उपन्यासकारों में अलग पहचान रखती है।
9. अलका जी की भाषा सजीवता और शिल्प की विविधता के कारण उपन्यास को मौलिकता प्रदान करती है।

**अध्ययन की नई दिशाएँ :-**

अलका जी उपन्यासों पर आज तक थोडा कम मात्रा में अनुशीलन हो चुका है। अलका सरावगी के प्रकाशीत केवल तीन उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन का अनुशीलन प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में किया है। अन्य शोधार्थियों को अलका सरावगी के साहित्य पर अनुसंधान करने के लिए कुछ नए विषयों का यहाँ संकेत दिया है -

1) ''अलका सरावगी के उपन्यासों का अनुशीलन''
2) ''अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित मूल्य विघटन''
3) ''कलिकथा : वाया बाइपास - एक आधुनिक बोध''
4) ''अलका सरावगी के उपन्यासों में चित्रित आधुनिक नारी जीवन''

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए है, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

-----x-----

मोहन जाधव
प्रा. डॉ. मोहन पी. जाधव
हिंदी विभाग,
छ. शिवाजी कॉलेज,
कॅम्प-सातारा-४१५००१.